अबोहर-पंजाब। ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त दिवस पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.सुनीता, ब्र.कु.पुष्प। साथ हैं पंजाब ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष रमेश कुमार शर्मा एवं एडवोकेट व लेखक परिषद के अध्यक्ष राज सदोष तथा अन्य।

अहमदनगर-महा.। रस्ता सुरक्षा अभियान के अंतर्गत सभी ड्राइवर भाई-बहनों को रोड सेफ्टी पर सम्बोधित करने के पश्चात् ब्र.कु.उज्जवला तथा अन्य।

भैरहवा। ज्ञान चर्चा के बाद समूह चित्र में नेपाल के पूर्व मंत्री भरत शाह एवं उनकी धर्मपत्नी अनीता शाह सपरिवार, ब्र.कु.शान्ति, ब्र.कु.भूपेन्द्र तथा अन्य।

भिवंडी-महा.। मुफ्त नेत्र जाँच शिविर के अवसर पर कैंडल लाइटिंग करते हुए मेयर प्रतिभा पाटिल, ब्र.कु.अल्का, म्यूनिसिपल कमिशनर जीवन सोनवाने, लायन्स क्लब के हर्षद मेहता तथा अन्य।

चित्तोड़गढ़-राज.। 18 जनवरी पर ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त दिवस के कार्यक्रम के पश्चात् पुलिस अधीक्षक प्रसन्न कुमार खमेसरा, ब्र.कु.आशा, ब्र.कु.शिवली, ब्र.कु.चित्रा, ब्र.कु.नाथूलाल तथा ब्र.कु.महेश।

कटक-ओडिशा। "स्पीरिचुअल पावर्स फॉर सक्सेस इन बिज़नेस एण्ड इंडस्ट्री" कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए पत्रकार अरुण कुमार पाण्डा, ब्र.कु.मनोज पटेल, ब्र.कु.कमलेश, ब्र.कु.गीता, पंचानन दास, के.एन.खतेई,आई.ए.एस तथा एस.एन.एम. ग्रुप के चेयरमैन प्रदीप्ता महंती।

प्रवृत्ति को पवित्र बनाना ही श्रेष्ठ जीवन

बड़ौदा। आज के घोर कलियुग के समय में जबकि जगह-जगह पर दुष्कर्म, भ्रष्टाचार और पापाचार फैल रहा है, हर मानव दु:ख, अशांति, असुरक्षा एवं अनेक रोगों से पीड़ित है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, वैरभाव के वशीभूत होकर विचार, वाणी और कर्म को नकारात्मक तथा दु:खदाई बनाता जा रहा है, केवल भौतिक उपलब्धि को ही जीवन का लक्ष्य बनाकर अंधी दौड़ लगा रहा है। अनेक धर्म, मठ, पंथ होने पर भी संसार असार होता जा रहा है। ऐसे समय में 30 से ज्यादा ऐसी विभूतियों के दर्शन हुए जिन्होंने पिछले 25 से अधिक वर्षों से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए शुद्ध भोजन और सात्विक जीवन पद्धति को अपनाने के साथ इन्हीं सिद्धान्तों को समाज में फैलाने के कार्य में अपना जीवन समर्पित किया।

इतना ही नहीं यहां पधारे 100 से अधिक भाई-बहन जो घर गृहस्थ में रहते ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर रहे हैं, पवित्र प्रवृत्ति मार्ग का उदाहरण समाज को दे रहे हैं। इन सबके मूल में है परमात्म प्राप्ति की अनुभूति। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'परमात्म प्राप्ति का चमत्कार-पवित्र आत्माओं का सत्कार' समारोह में बड़ौदा सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. डॉ. निरंजना ने व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि स्वयं निराकार परमात्मा शिव साकार ब्रह्मा के

बड़ौदा। कार्यक्रम के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु.सरला। साथ हैं ब्र.कु.डॉ.निरंजना, महंत श्री लोकराजपुरी महाराज तथा अन्य।

शरीर रूपी रथ में अवतरित होकर सहज राजयोग सिखा रहे हैं। जिसके फलस्वरूप ऐसी विभूतियां और ऐसे लाखों भाई-बहन तथा हज़ारों कुमार-कुमारियां समाज की आध्यात्मिक जागृति की सेवा में लगे हुए हैं।

महंत श्री लोकराजपुरी महाराज ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किये जा रहे कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि सच में ही हर व्यक्ति को मृत्यु से पहले अपने जीवन का मर्म समझना अति आवश्यक है। राजयोग से ही इसे समझा जा सकता है। हम सभी राजा परीक्षित जैसे हैं, हमें सात दिन में ज्ञान प्राप्त करना है।

गुजरात ज़ोन की संचालिका ब्र.कु. सरला ने सभी को अपने आशीर्वचन दिये तथा कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए सभी समर्पित भाई-बहन तथा सम्माननीय भाई-बहनों का अभिनंदन किया। माउण्ट आबू के ब्र.कु. विवेक ने मंच का कुशलतापूर्वक संचालन किया। कुमारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। ब्र.कु. नरेन्द्र ने सभी का स्वागत किया। ब्र.कु. सुरेखा ने अभिनंदन पत्र प्रस्तुत किया। ब्र.कु. ज्योति ने सभी को शुभेच्छा दी तथा ब्र.कु. मीना ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के पहले बहुत सुंदर एवं आकर्षक शोभायात्रा, बैण्ड एवं श्रृंगारित रथों में सम्मानित समर्पित बहन-भाई तथा हज़ारों ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों के साथ अल्कापुरी सेवाकेन्द्र से निकल शहर के भिन्न-भिन्न स्थानों से होते हुए कार्यक्रम स्थल पर पहुंची।

समय का सही उपयोग ही श्रेष्ठ भाग्य का आधार

एक बार एक प्रोफेसर अपने बच्चे को कुछ सिखाना चाहते थे। तो बड़ा कांच का जार लेकर के आये और गोल्फ के बॉल लेकर आए। बच्चों को कहा ये बॉल है, जो जार में भर दो। सभी ने बॉल से भर दिया जार को, तो प्रोफेसर ने कहा कि अभी और जायेगा। तो कहा नहीं अभी भर गया। अभी और नहीं जायेगा। प्रोफेसर ने छोटे-छोटे पत्थर निकाले और कहा डालो उसके अंदर, जायेगा। जो गैप थी उसके भीतर से सारे छोटे-छोटे पत्थर भीतर चले गए। तो पूछा कि और जायेगा, तो कहा कि अभी नहीं जायेगा ये तो फुल हो गया। प्रोफेसर ने बालू निकाली और कहा कि ये डालकर देखो कि ये जायेगा, वो भी चली गई। छोटे-छोटे गैप्स में वो बालू भी चली गई। फिर पूछा अभी और कुछ जायेगा। तो कहा अब बिल्कुल कुछ नहीं जायेगा। प्रोफेसर पानी लेकर आये और कहा डालो, वो भी चला गया।

ठीक इसी प्रकार हमने भी अपनी दिनचर्या को बड़े-बड़े गोल्फ बॉल से भर दिया और कहा कि टाइम कहां है हमारे पास, टाइम नहीं है। लेकिन इतना टाइम है कि वो छोटे-छोटे पत्थर भी जा सकते हैं, बालू भी जा सकता है, पानी भी जा सकता है, सब जा सकता है उसमें। बचपन से लेकर भगवान ने अब तक हमें चौबीस घंटें ही दिए हैं। बड़ों को ये तो नहीं कि जिम्मेवारी कर्तव्य ज्यादा होते हैं तो उसको पच्चीस घंटा बनाकर दे दो। बच्चे को चौबीस घंटा ठीक है। ऐसा कभी कहा क्या? किसी को पच्चीस घंटा मिला एक्सट्रा काम करने के लिए। सारे काम का एडजस्टमेंट किसमें होता है उसी चौबीस घंटें में होता है। बचपन में हमने चौबीस घंटे कैसे बिताए - खाया, पिया, खेला, सोया बस पूरा हुआ चौबीस घंटा। उसी में पूरा कर दिया। जैसे बच्चा थोड़ा बड़ा होता है स्कूल जाने लगता है तो खाया, पिया, खेला, सोया, स्कूल भी गया। फिर और थोड़ा बड़ा हुआ हाई स्कूल में जाने लगा तो खाया, पीया, खेला, सोया, और एक्टीविटी के साथ स्कूल भी, ट्यूशन भी। ट्यूशन एड हो गया उसमें। उसी के साथ-साथ जब और बड़ा हुआ, कोई जब स्पेशल लाइन लेता है, कॉलेज में जाता है तो खाया, पीया, खेला, सोया, फ्रेन्ड सर्कल, पार्टीज़, ट्यूशन ये सब एड हो गया उसमें। उसी के अंदर ही सब समा गया।

कहीं अगर उसको पैसे के लिए पार्ट-टाइम जॉब करना पड़ा, तो वो भी करता है। उसी के साथ जब और बड़ा होता है, जब शादी होती है तो खाया, पीया, सोया, फिर अपना कार्य व्यवहार संभाला, गृहस्थ संभाला, रिश्तेदारी निभायी, जिम्मेवारी निभायी, कहीं शादी है, कहीं कोई प्रसंग है सब उसी में समाता गया, कहां से आया समय....चौबीस घंटे का पच्चीस घंटा भगवान ने बनाकर दिया क्या? नहीं, उसी में समा गया माना इतना अतिरिक्त समय था हमारे पास।

अब मान लो कि किसी को हार्ट अटैक आ जाए, डॉक्टर के पास जाए और डॉक्टर उसको कहे कि देख भाई अगर तेरे को जीना है ना तो रोज सुबह आधा घंटा पैदल चलना पड़ेगा और शाम को आधा घंटा पैदल चलना पड़ेगा। अगर उसने डॉक्टर से कहा कि मुझे तो सुबह समय नहीं मिलेगा, मेरा सारा कारोबार सुबह में ही आरंभ होता है। सारे फोन कॉल सुबह में ही शुरू होते हैं और शाम को देखेंगे अगर समय मिला तो पैदल चलूंगा। तो डॉक्टर क्या कहेगा, क्या कहेगा - मरो, उसके सिवाए और कोई अलटरनेट ही नहीं है , तुम्हें बचाने का। तुम्हें अगर बचना है तो तुम अपना समय खुद निकालो और उस व्यक्ति को जब जीना है तो अपनी दिनचर्या को फिर से व्यवस्थित करेगा। सुबह आधा घंटा निकालेगा, शाम को भी आधा घंटा निकालेगा, पैदल निकल जायेगा। अरे फोन कॉल, कारोबार जो भी होगा, दो चार दिन लोगों के फोन आते रहेंगे, जैसे ही लोगों को पता चलेगा कि ये समय से पैदल गया होग, तो लोग भी क्या करते हैं, या तो पहले फोन करेंगे या बाद में करेंगे। लोग तो एडजस्ट हो जायेंगे। लेकिन हमें अपने जीवन को नष्ट थोड़े ही कर देना है दुनिया के कारोबार के पीछे। व्यक्ति को इतनी समझ आती है जब हेल्थ प्रॉब्लम आते हैं तब।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा